Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1429

तलवार से त्याग तक - अशोक की धम्म विजय

प्रो. ऋतु पटेल

गेस्ट फैकल्टी; इतिहासद्ध
राजकीय बॉगड महाविद्यालय कैम्पस, पाली

शोध सार

सम्राट अशोक द्वारा अपने शासन काल के 8 वें वर्ष (261BC) में अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। जिसकी जानकारी 13 वें शिलालेख में मिलती है। इस युद्ध में लाखों की संख्या में कलिंग नागरिक मारे गये तथा भयंकर नरसंहार हुआ, इस युद्ध की विभत्सता को देखते हुए, सम्राट अशोक ने अपनी साम्राज्यवादी विस्तार की नीति को त्याग दिया तथा भेरी घोष ; युद्ध नीतिद्ध के स्थान पर धम्म घोष की नीति ;धम्म नीतिद्ध अपनायी। यह भारतीय इतिहास का एकमेव अद्वितीय उदाहरण है। इतिहासकारों के मध्य इस बात को लेकर मतभेद है कि अशोक का धम्म क्या हैघ् यह एक नवीन धर्म है, या बौद्ध धर्म या राजधर्म है। लेकिन अशोक के शिलालेखो से ज्ञात होता है कि यह एक नवीन विचारधारा थी जिसका उद्देश्य विस्तृत साम्राज्य में सामाजिक सौहार्द व एकता स्थापित करना था।[1]

मुख्य शब्द:- सम्राट अशोक, धम्मनीति, शिलालेख, अहिंसा, स्तम्भ लेख।

1. **प्रस्तावना :–** मौर्य साम्राज्य के तीसरे **शासक** सम्राट **अशोक** का **शासनकाल** (269-232 BC) **विश्व** के इतिहास में **"सुशासन तथा लोक कल्याणकारी राज्य"** का **आदर्श** स्थापित किया। **राज्याभिषेक** के 8 वें **वर्ष** कलिंग **युद्ध** के नरसंहार के **पश्चात्** सम्राट **अशोक पश्चाताप** करने हेतु 1 **वर्ष** तक (260BC) पाटलिपुत्र के कुक्कुटराम विहार में **निष्क्रिय** अवस्था में रहे। इस **निष्क्रिय** अवस्था से बाहर आने के **पश्चात् अशोक** ने **बौद्ध** धर्म का प्रचार प्रसार का कार्य किया। 256 दिनों तक यात्राएं की। विहार यात्रा के स्थान पर धम्म यात्रा को बोध गया से आरम्भ किया।

बोधगया --- कुशीनगर --- लुम्बिनी --- कपिलवस्तु --- सारनाथ --- श्रावस्ती

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1429

2. धम्म का स्वरूप और परिभाषा :– **अशोक** के धम्म के स्वरूप को लेकर इतिहासकारो में भिन्न भिन्न मतभेद है। नीलकण्ठ **शास्त्री** के अनुसार यह एक नैतिक संहिता है, वही रोमिला थापर के अनुसार यह एक नवीन विचारधारा थी।

फ्लीट महोदय के अनुसार यह **अशोक** का राजधर्म था। V.स्मिथ ने इसकी तुलना अकबर के दीन–ए–इलाही धर्म से की। जबकि R.k. मुखर्जी तथा RP त्रिपाठी ने इसे सभी धर्मो के सार कहा था। अर्थात् सार्वभौमिक धर्म था। भण्डारकर, सेनार्ट तथा हुल्स ने **अशोक** को उपासक **बौद्ध** धर्म का अनुयायी था |

अशोक के धम्म की **परिभाषा अशोक** स्वयं अपने द्वितीय व सांतवें स्तस्भ लेख में देता है। इसमें **अशोक** स्वयं से **प्रश्न** पूछता है कि "किम् चू धम्मै"?[3] तथा इसका जवाब स्वयं देता है।

i. अपासिनवें : अल्प पाप
ii. बहुकथाने : बहुकल्याण
iii. सचिए : सत्य
iv. मादवे : मृदु बोले
v. साधवे : साधुता

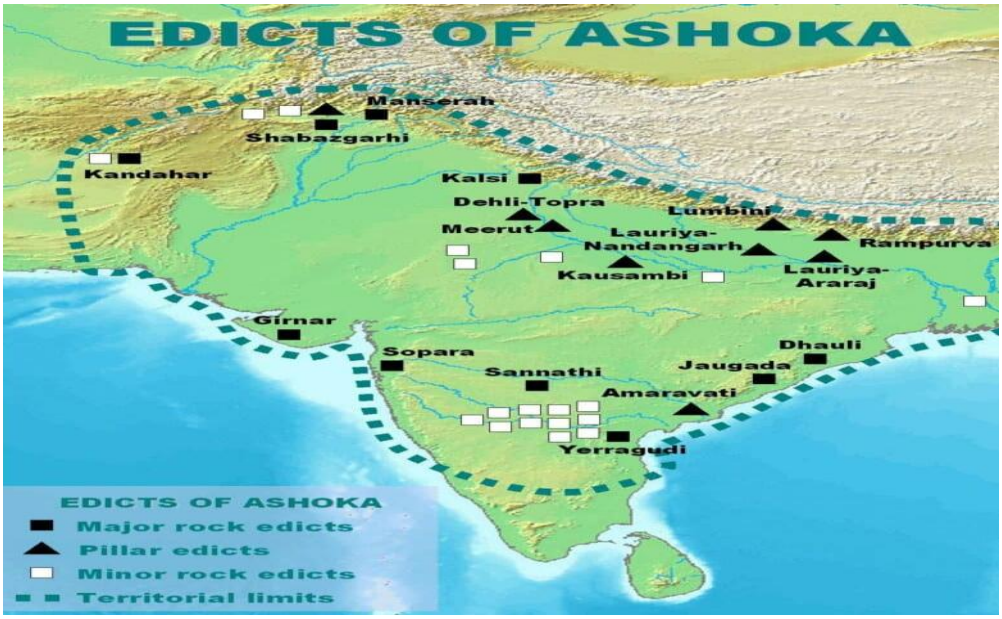

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1429

सांतवे शिलालेख के अनुसारः– इसमें लोगो को धम्म श्रवण के **सन्देश** दिये गये है तथा सभी सम्प्रदायों के लोग सभी जगह निवास करें क्योकि सभी आत्मसंयम् (आत्म नियंत्रण) तथा **आत्मसुद्धि** (मन की पवित्रता) चाहते है।

यही अशोक का धम्म है।

3. धम्म नीति की मुख्य विशेषताए :– अशोक द्वारा प्रचलित धम्म नीति किसी जटिल **दार्शनिक** सिद्वांत (जैसे चार आर्य सत्य, **अष्टांगीक** मार्ग) का उल्लेख नही है, बल्कि यह दैनिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति की **व्यावहारिक** नैतिकता पर **केन्द्रित** थी।

सम्राट अशोक की धम्म नीति :–1. सहिष्णुता (सभी पंथों का आदर)

2. अहिंसा (पशुबलि पर रोक)

3. सामाजिक कर्तव्य (बडों का सम्मान)

4. लोक कल्याण (सडक, कुंए, चिकित्सा)

1. अहिंसा और जीव संरक्षण (प्रथम शिलालेख) :– अशोक ने **पशु** बलि को **निषेध** किया तथा राजकीय **पाठशाला** में भी जीवों के वध को सीमित कर दिया।

2. **सामाजिक दायित्व (तीसरें व ग्यारवें शिलालेख) :–** मित्रों, परिचितों, बाह्मणों, माता–पिता की सेवा, दासों व **सेवको** के प्रति उचित व्यवहार तथा श्रमणों के प्रति उदारता व अहिंसा धम्म के आव**श**यक अंग है।

3. धार्मिक सहिष्णुता (बारहवां शिलालेख):– इस लेख में सभी सम्प्रदायों के लोग एक–दूसरें के **सिद्धांतो** को जाने, सभी धर्मों के सार की **वृद्धी** हों यदि **मनुष्य** अपने धर्म का आदर तथा दूसरें धर्म का अनादर करता है, तो वह स्वयं ही अपने धर्म को हानि पहुंचाता है।

4. व्यर्थ के कर्मकांडों को निषेध (नवें शिलालेख):– लोग **विशेषताए** स्त्रियों, जन्म, बीमारी, विवाह, यात्रा, आदि अवसरों पर बहुत से सारहीन मंगल करती है पर ऐसे मंगलाचरण फलदायी नही होते इसके स्थान पर "धम्म मंगल" **सर्वश्रेष्ठ** है।

5. धम्म के प्रचार–प्रसार के लिए प्रशासनिक कार्यः– अशोक ने धम्म नीति को एक नियम के तहत **घोषित** नही किया बल्कि जनता में इसकी अनुपालना करने के लिए राजुको, **प्रादेशिको** तथा धम्ममहामात्रों की नियुक्ति की। **अशोक** ने अपनी सारी राजआज्ञाओं को अभिलेखों के माध्यम से जनता तक पहुंचाया तथा व्यापक रूप से सम्पूर्ण साम्राज्य में अभिलेख लिखवाऐं।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1429

कनिघम् ने "CORPUS INSCRIPTIONOM INDICARUM" बनाम से **अशोक** के अभिलेखो का संग्रह किया।[7]

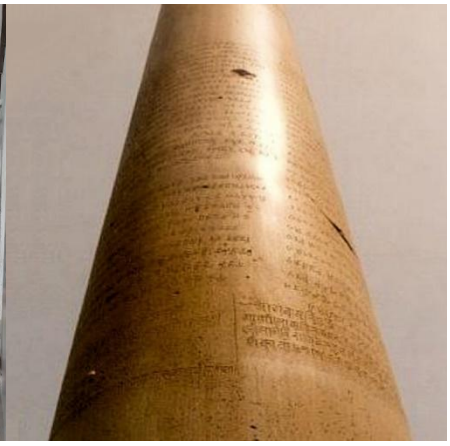

धम्म महामात्र[2]:– **राज्याभिषेक** के 13 वे **वर्ष अशोक** ने धम्ममहामात्रों की नियुक्ति की तथा इनका मुख्य कार्य जनता को धम्म की बातें समझाना तथा धम्म के प्रति रूचि पैदा करना था।

धम्म यात्राएँ:– **राज्याभिषेक** के दसवें **वर्ष** विहार यात्रा के स्थान पर धम्म यात्रा की **शुरुआत** की जिसमें ब्राहमणों, संन्यासियों व लोगो से मिलना तथा धर्मवार्ता करना।

लोक कल्याणकारी कार्य:– द्वितीय **शिलालेख** के अनुसार **अशोक** ने मानव चिकित्सा तथा **पशु** चिकित्सा का प्रबंध करवाया, तथा लोक कल्याणकारी कार्य के अंतर्गत कुंए खुदवाना, पेड लगवाना आदि कार्य किये।

6. धम्म नीति का मूल्यांकन:– इतिहासकार रोमिला थापर ने मौर्य साम्राज्य और सम्राट **अशोक** पर व्याापक **शोध** किया तथा इनकी पुस्तक "Ashoka and the decline of the mauryas" में **अशोक** के धम्म को एक नयी विचारधारा कहा, जिसका **उदेश्य** विस्तृत साम्राज्य में सामाजिक सौहार्द व एकता स्थापित करना था। क्योकि मौर्य साम्राज्य में यूनानी, बाह्मण, **बौद्ध**, आजीविको जैसे:– अनेक भिन्न भिन्न सांस्कृतिक व **धार्मिक** समूह थे, जिन्हे एक संगठन में लाना **मुश्किल** था, अतः **अशोक** ने सभी सम्प्रदायों के मध्य एकता व सौहार्द लाने के **उदेश्य** से धम्म नीति को लागू किया।

7. निष्कर्ष :– **निष्कर्षत**: सम्राट **अशोक** की धम्म नीति प्राचीन भारतीय **राजदर्शन** में लोककल्याणकारी राज्य की पहली सुव्यवस्थित तथा संगठित अभिव्यक्ति थी। कलिंग **युद्ध** की हिंसा के **पश्चात् युद्ध** नीति को त्यागकर नैतिक आचरण के बल पर **शासन** को व्यवस्थित रूप से चलाना, सम्पूर्ण **विश्व** में एक अद्वितीय उदाहरण है।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1429

H.C राय चौधरी के अनुसार **अशोक** में चन्द्रगुप्त मौर्य सी **शक्ति**, समुद्रगुप्त जैसी प्रतिभा तथा अकबर जैसी **सहिष्णुता** थी। H.G वेक्स के अनुसार **अशोक** के **प्रकाश** से इतिहास के स्तंभ वोल्गा से जापान तक सदैव **प्रकाशमान** रहेगा। लोककल्याणकारी धार्मिक **सहिष्णुता** तथा अहिंसा के जो प्रतिमान **अशोक** ने स्थापित किये वे आज भी संयुक्त **राष्ट्र** के सतत् विकास लक्ष्यों के लिए उतने ही प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. रोमिला थापर – अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन ।

(लंदन :ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1961) **पृष्ट** संख्याः 142-155, 181-185

2. राधाकुमुद मुखर्जी - अशोक

(लंदन :मैकमिलन एंड कंपनी लिमिटेड,1928) **पृष्ट** संख्याः 89-95, 112- 118

3.**गोरीशंकर हीराचंद ओझा - अशोक की धर्मलिपियॉ**

(वराणसी :नागरी प्रचारिणी सभा,1923) **पृष्ट** संख्याः 42-48, 65- 72

4. **डी. आर भंडारकर - अशोक**

(कलकत्ता :कलकत्ता **विश्व** विद्यालय,1925) **पृष्ट** संख्या 101-105

5. **उपिंदर सिंह - प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास**

(दिल्लीः पियर्सन इंडिया,2008) **पृष्ट** संख्या 377-380

6. **हरिशंकर शर्मा - भारत का इतिहास**

(जयपुरः जयपुर **पब्लिशिंग** हाउस) **पृष्ट** संख्या 266-276

7. **अलेक्जेंडर कनिघम - कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम इंडिकारम, वॉल्यूम I**

(कलकत्ताः सुप्रीटेडेट ऑफ गवर्नमेट प्रिटिंग का कार्यालय,1877) **पृष्ट** संख्या 08-42